खंड घ

लेखन

20 अंक

पाठ्यक्रम

क्रम. सं.	विषयवस्तु	उप भार	कुल भार
4.	**लेखन**		**20**
	(अ) विभिन्न विषयों और संदर्भों पर विद्यार्थियों के तर्कसंगत विचार प्रकट करने की क्षमता को परखने के लिए संकेत बिंदुओं पर आधारित समसामयिक एवं व्यावहारिक जीवन से जुड़े हुए विषयों पर 200 से 250 शब्दों में किसी एक विषय पर निबंध।	10	
	(ब) अभिव्यक्ति की क्षमता पर केंद्रित औपचारिक अथवा अनौपचारिक विषयों में से किसी एक विषय पर पत्र।	05	
	(स) किसी एक विषय पर 'प्रतिवेदन'।	05	

क्रम. सं.	लेखन	FA3 10	FA4 10	SAII 30
6.	पत्र-लेखन (5 अंक)			✓
7.	निबंध-लेखन (10 अंक)	✓		✓
8.	प्रतिवेदन (5 अंक)			✓

निबंध-लेखन

संकेत बिंदुओं पर आधारित निबंध-लेखन

निबंध–निबंध शब्द 'बंध' में 'नि' उपसर्ग लगने से बना है, जिसका अर्थ है–भली प्रकार कसा या बँधा हुआ। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि निबंध गद्‌य साहित्य की वह विधा है जिसमें निबंधकार किसी विषय पर अपने विचार को आधार बनाकर स्वतंत्र रूप से लेखनी चलाता है। ये विचार पूर्णतया मौलिक एवं शृंखलाबद्‌ध होते हैं, जिसमें क्रमबद्‌धता दिखाई देती है।

निबंध की विशेषताएँ–सामान्यतया एक निबंध की निम्नलिखित विशेषताएँ होती हैं–

1. निबंध की भाषा सदैव विषयानुकूल होनी चाहिए।
2. निबंध में वर्तनी की शुद्‌धता तथा अन्य विराम-चिह्नों का ध्यान रखना चाहिए।
3. विचारों में क्रमिकता तथा सुसंबद्‌धता होना चाहिए।
4. एक जैसे भाव प्रकट करनेवाले वाक्य एक ही स्थान पर होने चाहिए।
5. वाक्यों की पुनरावृत्ति से बचना चाहिए।
6. निबंध में सूक्तियों, लोकोक्तियों तथा मुहावरों का प्रयोग करने से भाषा सरस तथा रोचक हो उठती है।
7. शब्द-सीमा का ध्यान रखते हुए अनावश्यक विस्तार से बचना चाहिए।

निबंध के अंग–निबंध के मुख्यतया तीन अंग माने जाते हैं–

1. **परिचय/भूमिका**–इसे निबंध का प्रवेश द्‌वार या आरंभ कहा जा सकता है। निबंध की भूमिका इस प्रकार होनी चाहिए कि पाठक के मन में पूरे निबंध को पढ़ने की इच्छा जाग उठे।
2. **विस्तार**–भूमिका के बाद निबंध का विस्तार शुरू होता है। इस भाग में निबंध के विभिन्न पक्षों का अलग-अलग अनुच्छेदों में वर्णन किया जाता है। इसमें हर अनुच्छेद इस प्रकार समाप्त होता है कि वह दूसरे से अपने-आप संबद्‌ध हो जाता है।
3. **उपसंहार**–यह निबंध का निकासद्‌वार है, जिसमें निबंध का सार समाहित होता है। यह अंग ऐसा होना चाहिए कि निबंध पाठक के मन में अमिट छाप छोड़ सके।

निबंध के प्रकार–सामान्यतया निबंध 4 प्रकार के होते हैं–

1. **वर्णनात्मक**–इस निबंध से आशय उन विषयों वाले निबंधों से है, जिनमें कल्पना और अनुभव को व्यक्त करने का अवसर होता है। इनमें प्रायः स्थान, वस्तु, दृश्य आदि का क्रमबद्‌ध वर्णन होता है। विभिन्न त्योहार–दीपावली, रक्षाबंधन, ईद, दशहरा, होली, किसी प्रदर्शनी, मैच या मेले के वर्णन संबंधी निबंध इसी श्रेणी में आते हैं।
2. **विवरणात्मक**–इस श्रेणी में ऐसे विषयों पर निबंध लिखे जाते हैं जिनमें किसी विषयवस्तु का क्रमबद्‌ध विवरण दिया गया हो। इसके अलावा इसमें विषय से संबंधित घटनाओं, व्यक्तियों आदि को विवरण होता है; जैसे–दिल्ली के दर्शनीय स्थल, मेरी वैष्णो देवी की यात्रा, विद्‌यालय का वार्षिक उत्सव आदि।
3. **विचारात्मक**–इस श्रेणी के निबंधों में काल्पनिकता तथा अनुभव की जगह विचारों की प्रधानता होती है। इनमें किसी समस्या, विचार, मनोभाव को विश्लेषणात्मक शैली में प्रस्तुत किया जाता है; जैसे–जनसंख्या की समस्या, दहेज-प्रथा नशाखोरी, बेकारी की समस्या आदि।

4. भावात्मक—इस श्रेणी के निबंधों में भाव-तत्त्व की प्रधानता होती है; जैसे—परोपकार, साहस, साँच बराबर तप नहीं आदि।

अच्छा निबंध कैसे लिखें—

निबंध-लेखन एक कला है जो अभ्यास से आती है। इसके लिए इसका बार-बार अभ्यास करना आवश्यक है। अच्छा निबंध लिखने के लिए निम्नलिखित बिंदुओं पर ध्यान देना चाहिए—

- निबंध-लेखन में मौलिक विचारों का समायोजन होना चाहिए।
- विचारों में सुस्पष्टता तथा क्रमबद्धता होनी चाहिए।
- निबंध लिखते समय शब्द-सीमा का ध्यान अवश्य रखना चाहिए।
- वाक्य सरल, छोटे तथा भावाभिव्यक्ति में समर्थ होने चाहिए।
- भाषा की शुद्धता पर ध्यान रखना चाहिए।
- निबंध में आवश्यकतानुसार सूक्तियों, लोकोक्तियों, मुहावरों तथा उद्धरणों का प्रयोग करना चाहिए।

उदाहरणस्वरूप कुछ निबंध निम्नलिखित हैं—

1. आँखों देखे मैच का वर्णन

संकेत बिंदु : • क्रिकेट मैच • मैच का आयोजन कहाँ और किसके-किसके बीच • मैच का वर्णन • रोमांच • हार-जीत • सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी।

अन्य बच्चों की भाँति मुझे भी क्रिकेट देखना और खेलना पसंद है। मेरी अभिलाषा थी कि मैं किसी स्टेडियम जाकर मैच देखूँ। आखिर 13 मई, 2013 को मुझे यह सुअवसर मिल ही गया।

विद्यालय में छुट्टियाँ पड़ गई थीं। मैं परिवार के साथ मुंबई गया हुआ था। वहाँ के वानखेड़े स्टेडियम में आई.पी.एल—6 का लीग मैच देखने का अवसर प्राप्त हुआ। यह मैच सनराइजर्स हैदाराबाद और मुंबई इंडियन के बीच रात 8 बजे से खेला जाना था। स्टेडियम के गेट पर टिकट दिखाकर हम अंदर गए और सीटों पर बैठ गए।

सनराइजर्स हैदराबाद ने पहले बल्लेबाजी का फैसला किया। पार्थिव पटेल और शिखर धवन बल्लेबाजी के लिए उतरे। दोनों ही बल्लेबाज कुछ विशेष करने की सोच कर आए थे। दोनों ने शानदार बल्लेबाजी शुरू की। मिशेल जानसन और लसिथ मलिंगा की गेंदबाजी उन्हें रन बनाने से नहीं रोक पा रही थी। मलिंगा ने सबसे पहले पार्थिव पटेल को आउट किया, जिन्होंने 26 रन बनाए। अब धवन का साथ देने आए युवा बल्लेबाज हनुमा विहारी। उन्होंने शानदार 41 रन बनाए। इसी बीच धवन ने अपना अर्धशतक पूरा किया और 59 रन बनाकर आउट हुए। केमरून ह्वाइट 43 और तिसारा परेरा 02 रन बनाकर अविजित रहे। इस प्रकार टीम ने तीन विकेट पर 178 रन का अपना सर्वोच्च स्कोर बनाकर मुंबई इंडियन के सामने 179 रन का लक्ष्य रखा।

जीत के लिए 179 रनों का लक्ष्य लेकर मुंबई इंडियन के बल्लेबाज ड्वेन स्मिथ और सचिन तेंदुलकर उतरे, जिन्हें देख सारा स्टेडियम तालियों की गड़गड़ाहट से गूँज उठा। दोनों सँभलकर बल्लेबाजी कर रहे थे, पर शुरूआती दो ओवर ड्वेन ही बल्लेबाजी करते रहे। सब ठीक-ठाक चल रहा था कि चौथे ओवर में इशांत शर्मा की एक सीधी गेंद स्मिथ का मिडल स्टंप ले उड़ी। उन्होंने 26 रन बनाए। तेंदुलकर का साथ देने अब दिनेश कार्तिक आए, जिन्होंने तेंदुलकर का अच्छा साथ दिया। तेंदुलकर अपनी लय में थे। उन्होंने युवा लेग स्पिनर करन शर्मा की गेंद पर चौका और छक्का जड़ा, परंतु इसके बाद उनके हाथ में तकलीफ हुई और वे रिटायर्ड हर्ट होकर वापस चले गए। उनका यूँ जाना हमें तनिक भी अच्छा न लगा। हमें उनके वापस आने और बल्लेबाजी करने की उम्मीद थी। अब दिनेश कार्तिक का साथ देने स्वयं कप्तान रोहित शर्मा आए। इसी ओवर में करन शर्मा ने दिनेश कार्तिक को ह्वाइट के हाथों कैच आउट करा दिया। उन्होंने 30 रन बनाए। इसी युवा स्पिनर ने नए बल्लेबाज अंबाती रायडू को भी स्टंप करा दिया। अब मुंबई का स्कोर 3 विकेट पर 99 रन हो चुका था। अंतिम छह ओवर में मुबंई इंडियंस को जीत के लिए 79 रन चाहिए थे जो काफी मुश्किल लक्ष्य था। मुझे तो हार की संभावना दिखने लगी। दो ओवर में यह हार और निकट आती दिख रही थी। अब टीम को 24 गेंद में 64 बनाने थे। सत्रहवाँ ओवर लेकर तिसारा परेरा आए और सामने थे बल्लेबाज कीरोन पोलार्ड। उन्होंने इसी ओवर में लगातार तीन छक्के ठोककर सारा समीकरण बिगाड़ दिया। इस ओवर में कुल उनतीस रन बने। अमित मिश्रा के अगले ओवर में पोलार्ड ने फिर

तीन छक्के ठोक दिए। इन दो ओवरों में 50 रन बनते ही लक्ष्य पास आ गया। अंतिम ओवर में जीत के लिए 7 रन चाहिए थे, जिन्हें पोलार्ड ने दो छक्के लगाकर बनाया और मैच मुंबई इंडियंस की झोली में डाल दिया। उन्होंने 27 गेदों में 66 रन की धमाकेदार पारी खेली।

मैच समाप्त होते ही स्टेडियम नीले झंडों में नहा उठा और हम घर वापस आ गए। मुझे यह रोमांचक मैच याद रहेगा।

2. मेरी प्रिय पुस्तक

संकेत बिंदु : • प्रिय पुस्तक रामचरित मानस • इसके रचयिता और इसकी लोकप्रियता • विशेषता • परिचय • भाव एवं शैलीगत विशेषता।

पुस्तकें मनुष्य की सबसे अच्छी मित्र हैं। इनके माध्यम से वह हर प्रकार का ज्ञान प्राप्त करता है और मनोरंजन भी करता है। पुस्तकें ज्ञान को अगली पीढ़ी तक पहुँचाने का सर्वोत्तम साधन भी हैं। पुस्तकें पढ़ना अच्छी आदत है। मुझे भी पुस्तकें पढ़ने का चाव है। मैंने अब तक जितनी भी पुस्तकें पढ़ी हैं उनमें 'रामचरितमानस' ने सर्वाधिक प्रभावित किया है।

'रामचरितमानस' के रचनाकार महाकवि गोस्वामी तुलसीदास जी हैं। यह उनकी श्रेष्ठतम रचना है। इसकी लोकप्रियता देश में ही नहीं विदेश में भी है। यह हिंदी साहित्य का अमूल्य और अनुपम ग्रंथ है। इसकी लोकप्रियता का अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है कि यह करीब हर उत्तर भारतीय हिंदू के घरों में मिल जाती है, जिसका वे अत्यंत आदर से पाठ करते हैं।

इस अनमोल रत्न की रचना उस समय हुई जब भारत में मुगलों का अत्याचार चरम पर था। हिंदुओं को मारा-काटा जा रहा था। उनके देवालयों को धराशयी किया जा रहा था। हिंदुओं की पुकार सुनने वाला कोई न था। दीन-हीन जनता को भगवान का एकमात्र सहारा रह गया था, तभी इस महाग्रंथ ने हताश भारतीय जनमानस को अवलंबन दिया, जिससे उन्हें जीवनशक्ति मिली।

इस ग्रंथ की रचना संवत 1631 में शुरू की गई। आज लगभग चार सौ वर्ष की अवधि बीतने पर भी इसकी प्रासंगिकता में कोई कमी नहीं आई है। इसमें समाज के हर वर्ग के लिए तथा हर मानवीय संबंध के लिए संदेश निहित है। इसमें भगवान राम की पावनगाथा और उदात्त जीवन-चरित्र के माध्यम से ये संदेश दिए गए हैं। शिक्षा से विमुख होते और मानवीय मूल्यों की उपेक्षा करते, आज के विद्यार्थियों को राम और लक्ष्मण के माध्यम से कहा गया है–

"प्रातकाल उठि के रघुनाथा। माता-पिता गुरु नावहिं माथा।।"

इसका फल भी उन्हें शीघ्र मिल जाता है–

"गुरु गृह पढ़न गए दोउ भाई। अल्पकाल सब विद्या पाई।"

इसी प्रकार आज के प्रजातंत्र में हमारे माननीयों के लिए निहित संदेश देखिए–

"जासु राज निज प्रजा दुखारी। सो नृप अवस नरक अधिकारी।।"

इस ग्रंथ में मित्र का मित्र के प्रति, भाई का भाई के प्रति, सेवक-स्वामी के प्रति, पिता-पुत्र के प्रति, पति-पत्नी के प्रति संबंधों का सुंदर निरूपण है। यदि लोग इसके अनुरूप आचरण करने लगें तो रामराज्य की कल्पना साकार हो उठेगी।

इस ग्रंथ की भाषा-शैली और छंद-रचना इतनी सरल और सहज है कि कम पढ़ा-लिखा व्यक्ति भी आसानी से समझ सकता है। हिंदी साहित्य और भारतीय जनमानस के लिए यह अमूल्यनिधि है।

3. मेरे सपनों का भारत

संकेत बिंदु : • भारत गौरवशाली बने • भारत का गौरवशाली अतीत • सोने की चिड़िया • भारत की वर्तमान समस्या • उपाय।

मैं जिस राष्ट्र की सुंदर और पावन जमीं पर रहता हूँ, विश्व उसे भारत के नाम से जानता है। प्राचीन काल में यह अत्यंत संपन्न और गौरवशाली देश था। काल के थपेड़ों को सहते-सहते इस देश को कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। वर्तमान में इसे अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। मैं अपने सपनों के भारत को एक विकसित गौरवशाली और महान राष्ट्र के रूप में देखना चाहता हूँ।

भारत सदा से अहिंसा का पुजारी रहा है। यहाँ जन्मे विभिन्न महापुरुषों—गौतम बुद्ध, महावीर स्वामी, सम्राट अशोक गुरुनानक, महात्मा गाँधी आदि ने अहिंसा का संदेश पूरी दुनिया को दिया। ये लोग मारकाट में विश्वास नहीं करते थे। मेरे सपनों का भारत ऐसा होगा, जिसमें हिंसा आतंकवाद आदि के लिए कोई स्थान नहीं होगा। सब परस्पर शांति और प्रेम से रहेंगे।

भारत सदा से ही ज्ञान का केंद्र रहा है। इसने पूरी दुनिया में सांस्कृतिक और आध्यात्मिक दृष्टि से विश्व में ज्ञान का आलोक फैलाया। गणित के क्षेत्र में शून्य भारत की ही देन है। प्राचीन काल में यहाँ तक्षशिला, नालंदा जैसे सुप्रसिद्ध विश्वविद्यालय थे, जहाँ भारतीय ही नहीं विदेशी भी ज्ञानार्जन करने आते थे। दुर्भाग्य से आज हमें उच्चशिक्षा हेतु विदेशों में जाना पड़ता है। मेरे सपनों का भारत पुनः शिक्षा के विषय में विश्व के विकसित देशों जैसा ही होगा।

प्राचीन काल में भारत आर्थिक दृष्टि से अत्यंत समृद्धशाली था। इसे 'सोने की चिड़िया' कहा जाता था। इसकी धन-संपदा देख विदेशियों को लालच आया। उन्होंने कई बार इस देश पर आक्रमण किए। आज भारत को निर्धनता का सामना करना पड़ रहा है। मेरे सपनों का भारत पुनः पहले से अधिक धनी और समृद्ध होगा।

वर्तमान में शोषण की समस्या उठ खड़ी हुई है। पूँजीपति मज़दूरों का, नेता भोली भाली जनता का, दुकानदार ग्राहकों का शोषण कर रहे हैं। ठेकेदारी-प्रथा में शोषण और भी बढ़ गया है। सभी को अवसर की समानता न उपलब्ध होने के कारण वर्ग विशेष का शोषण किया जा रहा है। मेरे सपनों के भारत में सभी शोषणमुक्त होंगे और सभी को समान अवसर मिलेंगे।

वर्तमान भारत में अनेक सामाजिक रूढ़ियाँ और कुरीतियाँ फैली हैं जो विकास में बाधक सिद्ध होती हैं। इनमें दहेज-प्रथा, छुआछूत, ऊँच-नीच की भावना आदि हैं। मेरे सपनों का भारत इन कुरीतियों से मुक्त हो प्रगति के पथ पर उत्तरोत्तर बढ़ता रहेगा।

मेरे सपनों के भारत में वास्तविक लोकतंत्र होगा, जहाँ नेता दल बदलते, वोट खरीदते, जनता को चुनावी झाँसे देते, वोट के बदले नोट बाँटते नजर नहीं आएँगे। वे माननीय होकर अमाननीयों जैसा अमर्यादित व्यवहार नहीं करेंगे। ये नेतागण सच्चे राष्ट्र-भक्त होंगे।

4. आधुनिक भारत की प्रगति में बाधाएँ

संकेत बिंदु : • भूमिका • जनसंख्या वृद्धि प्रगति में बाधक • आतंकवाद • देश को खंडित करने की कुचालें • असमानता • निराकरण।

भारत एक विशाल राष्ट्र है। स्वतंत्रता से पूर्व यहाँ की सबसे बड़ी समस्या थी—परतंत्रता या गुलामी। हज़ारों-लाखों शहीदों और राष्ट्रभक्तों के बलिदान और प्रयास से हमें आज़ादी मिली। ऐसा नहीं है कि आज़ादी मिलते ही सारी समस्याएँ समाप्त हो गईं। आधुनिक भारत में अनेक समस्याएँ हैं जो उसकी प्रगति की राह में बाधा बनी हुई हैं।

वर्तमान भारत की सबसे मुख्य समस्या जनसंख्या की वृद्धि है। इसका असर हर शहरी क्षेत्र और ग्रामीण क्षेत्र में देखा जा सकता है। ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि योग्य भूमि बँटते-बँटते अब घर बनाने भर के लिए भी नहीं बची है। शहरी क्षेत्र में यह जनसंख्या बहुत सी समस्याओं की जड़ बन चुकी है। भोजन, आवास, परिवहन, चिकित्सा सेवा, शिक्षा आदि क्षेत्रों में भयंकर भीड़ है। वस्तुतः ये सुविधाएँ हर साल कम पड़ती जा रही हैं। सरकार इनकी पूर्ति करने का जितना प्रयास करती है, बढ़ती जनसंख्या उस प्रयास को विफल कर देती है।

वर्तमान भारत को आतंकवाद की समस्या का सामना करना पड़ रहा है। कभी यह घरेलू होता है तो कभी विदेशी। यह अपने साथ जान-माल की भयंकर क्षति साथ लेकर आता है। बहुत से निर्दोष लोगों को अकारण अपनी जान गँवानी पड़ती है। सेना और पुलिस के जवान अकारण कुर्बान होते हैं। पंजाब, जम्मू-कश्मीर, बिहार, झारखंड, छत्तीसगढ़, पश्चिम बंगाल आदि में आतंकी समय-समय पर यह घृणित काम कर जाते हैं।

आज भारत को खंडित करने की कुचाल चली जा रही है। पड़ोसी देश चीन और पाकिस्तान इस पर नज़र गड़ाए बैठे हैं। ये भारत की एकता और अखंडता को तार-तार करना चाहते हैं। इसके अलावा अपने देश के कुछ तथाकथित राष्ट्रसेवक (नेतागण) क्षेत्रीयता, धार्मिकता, सांप्रदायिकता, भाषागत और जातीय आधार पर लोगों को उकसाकर, क्षेत्रीय पार्टियाँ बनाकर राज्यों के और टुकड़ेकर देश की एकता, अखंडता पर प्रहार कर रहे हैं। केंद्र सरकार की तुष्टीकरण की नीति भी इस काम में सहायक हो रही है।

कभी 'सोने की चिड़िया' कहे जाने वाले देश की बहुसंख्यक जनता की आज भी अपनी ज़रूरतें पूरी नहीं हो रही हैं। इसका कारण गरीबी है। देश का सारा धन कुछ मुट्ठी भर लोगों के कब्जे में है जिस पर वे कुंडली मारे बैठे हैं। गरीब भूख से मर रहा है और ये रईस बदहज़मी से। आम व्यक्ति कुपोषण का शिकार हो रहा है और ये मोटपे का। सरकार की योजनाएँ भी भ्रष्ट अधिकारियों के कारण उन तक नहीं पहुँच पा रही हैं। वे गरीबों की भलाई की जगह अपना ही भला करने में लगे हैं। नेतागण भी इस काम में पीछे नहीं हैं। वे जनता की गरीबी हटाने के बजाए अपनी अमीरी बढ़ाने में लगे हैं।

इन समस्याओं से देश को मुक्त करने के लिए सरकार को निष्ठा से प्रयास करना चाहिए।

5. देश के प्रति नागरिकों के कर्तव्य

संकेत बिंदु : • देश सर्वाधिक महत्वपूर्ण • देश के प्रति लगाव • देश के प्रति ईमानदारी • देश के प्रति सम्मान • निःस्वार्थ प्रेम • कर्तव्य का भली प्रकार से निर्वहन।

'देश हमें देता है सब कुछ हम भी तो कुछ देना सीखें।' यह पंक्ति हमें उनके कर्तव्यों की याद दिला रही है जो किसी देश के प्रति वहाँ के निवासियों के होने चाहिए। हम मातृऋण, पितृऋण की बात तो करते हैं पर देश के प्रति अपने कर्तव्यों को भूल जाते हैं, जो इन ऋणों से भी अधिक महत्वपूर्ण है।

कोई भी व्यक्ति जिस देश में जन्म लेता है, उसका अन्न, जल ग्रहण कर पोषित होता है, जिसकी रज में लोट-लोटकर पुष्ट बनता है, उस देश की मातृभूमि के प्रति माता के समान सम्मान भाव रखना चाहिए। उस देश के राष्ट्रीय प्रतीकों का सम्मान करना चाहिए। व्यक्ति में देश-प्रेम, देशभक्ति की उत्कट भावना होनी चाहिए और मातृभूमि पर आँख उठाने वालों को मुँह तोड़ जवाब देना चाहिए तथा आवश्यकता पड़ने पर अपना सर्वस्व अर्पित कर देना चाहिए।

किसी देश के प्रति वहाँ के नागरिकों को कर्तव्य बनता है कि वे उसकी प्रगति में भरपूर योगदान दें। राष्ट्र को स्वावलंबी बनाने में मदद करें। देशवासी ऐसा तभी कर सकते हैं जब वे अपने-अपने कार्य को पूरी निष्ठा और ईमानदारी से करें। देश को आर्थिक रूप से सुदृढ़ बनाने के लिए वहाँ के नागरिकों को ईमानदारीपूर्वक करों का भुगतान करना चाहिए।

देश के नागरिक कहीं भी हों किसी भी हाल में हों, उन्हें राष्ट्र के सम्मान का ध्यान अवश्य रखना चाहिए। हमें कोई ऐसा कार्य नहीं करना चाहिए, जिससे राष्ट्र के सम्मान पर आँच आए। हमें राष्ट्र-सम्मान को आहत करने वाली बातें भी नहीं करनी चाहिए। हमें उस जापानी नवयुवक, जिसने स्वामी रामकृष्ण को फलों का टोकरा देते हुए यह कहा था कि 'आप अपने देश जाकर यह न कहें कि जापान में अच्छे फल नहीं मिलते हैं' की तरह कार्य-व्यवहार कर राष्ट्र का मान-सम्मान बढ़ाने वाला कार्य करना चाहिए।

एक नागरिक के रूप में हमारा यह कर्तव्य बनता है कि हम देशद्रोह जैसे किसी काम में शामिल न हों। हम आतंकवादियों या देशद्रोहियों के बहकावे में न आएँ और राष्ट्र विरोधी किसी कार्य को अंजाम न दें। देखा गया है कि कुछ लोग अपनी स्वार्थपूर्ति के लिए या थोड़े से धन के लोभ में देश की गुप्त सूचनाएँ, आतंकवादियों या विदेशियों को देकर देश की सुरक्षा के साथ खिलवाड़ करते हैं और देश को खतरा पैदा करते हैं।

हमें देश में व्याप्त बुराइयों की रोकथाम के लिए भी यथासंभव सहयोग देना चाहिए। इसके आलावा प्रदूषण नियंत्रण, स्वच्छता, वृक्षारोपण, सर्वशिक्षा अभियान जैसे कार्यक्रमों में समय-समय पर भाग लेकर अपना कर्तव्य निभाना चाहिए, ताकि देश सफलता एवं उन्नति की ओर बढ़ता रहे।

6. मेरे जीवन का लक्ष्य

संकेत बिंदु : • लक्ष्य का निर्धारण • लक्ष्य अध्यापक बनना • लक्ष्य-प्राप्ति हेतु किए गए संघर्ष का वर्णन • अध्यापक बनने का उद्‌देश्य • संकल्प।

निरुद्‌देश्य घूमना सफलता की राह से हमें दूर ले जाता है, इसलिए व्यक्ति को कोई-न-कोई लक्ष्य अवश्य निर्धारित कर लेना चाहिए। जिस प्रकार पथिक घर से निकलने से पूर्व ही अपनी मंजिल तय कर लेता है कि उसे कहाँ जाना है, और वह मंजिल की

ओर कदम बढ़ा देता है। उसी प्रकार मनुष्य को भी लक्ष्य निर्धारित कर उसे पाने की ओर कदम बढ़ा देना चाहिए। मैंने अपने जीवन में अध्यापक बनने का लक्ष्य निर्धारित किया है।

मैंने बचपन में ही अपने अध्यापक को संत कबीर का यह दोहा पढ़ाते हुए देखा-सुना था–

"गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागूँ पाँय।
बलिहारी गुरु आपनो, गोबिंद दियो बताया।।"

इस दोहे का भावार्थ यह है कि गुरु ने ही भगवान से परिचय कराया अतः उसका स्थान ईश्वर से भी ऊँचा है। बस तभी से मेरे मन में अध्यापक बनने की धुन सवार हो गई।

अध्यापक बनने के लिए मैंने अभी से सभी विषयों की गहन पढ़ाई शुरू कर दी है। मैं बारहवीं परीक्षा 'ए' ग्रेड में उत्तीर्ण करना चाहता हूँ। मैं ग्रेड के साथ-साथ विषयों का गहन अध्ययन करूँगा ताकि चाहे अंकों के आधार पर चयन हो या प्रतियोगी परीक्षा के आधार पर अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम में अवश्य प्रवेश ले सकूँ और सफलतापूर्वक प्रशिक्षण पूरा कर चयन के लिए होने वाली परीक्षा उत्तीर्ण कर अध्यापक बन सकूँ।

अध्यापक को राष्ट्र-निर्माता कहा जाता है। ऐसे में उसका कार्य और दायित्व दोनों ही महत्त्वपूर्ण बन जाते हैं। वह अपने व्यक्तित्व को आदर्श बनाकर छात्रों को उच्च चरित्र निर्माण और अच्छे संस्कार अपनाने के लिए प्रेरित कर सकता है। मैं विद्यार्थियों को उच्चकोटि के साहित्यकारों और विचारकों की रचनाएँ और लेख पढ़ने के लिए प्रेरित करूँगा ताकि वे भी चरित्रवान बन सकें, उनमें देश-प्रेम, देशभक्ति की उत्कट भावना विकसित हो और वे सुयोग्य नागरिक बन सकें।

अध्यापक बनकर भी मैं पढ़ने से अपना नाता बनाए रखूँगा ताकि स्वयं को नित नए परिवर्तनों से अवगत रख सकूँ और अपने छात्रों को अवगत कर सकूँ। मैं उनके स्तर पर उतरकर उनको रुचिकर पद्धति से पढ़ाऊँगा ताकि वे पढ़ाई में रुचि लें। मैं कमजोर छात्रों पर विशेष ध्यान देकर उनकी समस्याओं पर व्यक्तिगत रूप से ध्यान दूँगा। मैं आर्थिक रूप से कमजोर छात्रों की यथासंभव सहायता करके आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करता रहूँगा।

एक आदर्श अध्यापक के रूप में मेरा लक्ष्य धन कमाना न होकर राष्ट्र-सेवा तथा निष्ठा एवं ईमानदारीपूर्वक अपने कर्तव्य का निर्वाह करना होगा। मैं ऐसा करके एक सफल एवं योग्य अध्यापक बनने का प्रयास करूँगा।

7. भारत और उसकी ऋतुएँ

संकेत बिंदु : • भारत की ऋतुएँ • ग्रीष्म ऋतु का वर्णन • वर्षा ऋतु का वर्णन • शरद ऋतु का वर्णन • हेमंत ऋतु का वर्णन • शिशिर ऋतु का वर्णन • वसंत ऋतु का वर्णन • उपसंहार।

प्रकृति ने भारत को उन्मुक्त रूप से सौंदर्य प्रदान किया है। यहाँ पाई जाने वाली छह ऋतुएँ क्रमशः आती हैं और अपना सौंदर्य लुटाकर देश के सौंदर्य में वृद्धि कर जाती हैं। यहाँ पाई जाने वाली छह ऋतुएँ हैं–ग्रीष्म, वर्षा, शरद, शिशिर, हेमंत और वसंत। इनमें से प्रत्येक ऋतु का काल लगभग दो महीने का होता है।

ग्रीष्म ऋतु का काल वैशाख और जेठ महीने होते हैं। इस महीने में खूब गर्मी पड़ती है। इस समय दिन बड़े और रातें छोटी होती हैं। दोपहरी में लू चलती है। गर्मी के कारण धरती तपता तवा जैसी लगती है। इस समय आम, लीची, कटहल, अंगूर, शहतूत आदि फलों के अलावा खरबूज़ा, तरबूज़ा खीरा, ककड़ी खाने का आनंद उठाया जा सकता है। शीतल पेय, लस्सी, आइसक्रीम इसी ऋतु में जी भरकर खाए-पिए जाते हैं।

वर्षा ऋतु का काल आषाढ़ और सावन महीना है। यह ऋतु धरती और प्राणियों को गर्मी की तपन से शीतलता प्रदान करती है। आसमान में काले बादल, चमकती बिजली, बरसता पानी, तालाब, रास्ते, खेतों में भरा पानी, उनमें नाव चलाते बच्चे मन को हरते हैं। इसी समय खरीफ की फसलों की बुवाई की जाती है।

शरद ऋतु का काल भादों और क्वार महीने हैं। यह ऋतु अत्यंत प्रिय लगती है। आसमान साफ रहता है। इस समय चाँदनी रातें बड़ी ही शीतल और सुहानी लगती हैं। दशहरा इसी ऋतु का प्रसिद्ध त्योहार है। धान की पक्की फसलें खुशहाली आने का संदेश देती प्रतीत होती हैं।

हेमंत ऋतु का काल कार्तिक और क्वार महीने हैं। इस समय सर्दी पड़नी शुरू हो जाती है। खेतों में फसलें पकने लगती हैं। नाना प्रकार की सब्ज़ियाँ तैयार हो जाती हैं। रबी की फसलों की बुवाई का काम शुरू हो जाता है। दीपावली, भैया दूज, गोवर्धन पूजा, गुरु पूर्णिमा आदि प्रसिद्‌ध त्योहार इसी समय मनाए जाते हैं।

शिशिर ऋतु का काल पौष और माघ है। गरीबों के लिए यह ऋतु अत्यंत कष्टकारी होती है। इस समय भयंकर सर्दी पड़ती है। मैदानी इलाकों में कभी-कभी पाला पड़ता है जिससे फसलें खराब होती हैं। प्रायः कोहरा पड़ता है। पहाड़ी क्षेत्रों में बर्फ पड़ती है। वहाँ का तापमान 0° सेल्सियस से भी नीचे पहुँच जाता है।

वसंत ऋतु का काल फागुन और चैत महीने हैं। इसे ऋतुराज भी कहा जाता है। इस समय गर्मी और सर्दी न के बराबर होती है। चारों ओर फूल खिल जाते हैं। यह ऋतु अत्यंत मोहक और उत्तेजक होती है। होली, बसंत पंचमी, रामनवमी आदि इस ऋतु के प्रसिद्‌ध त्योहार हैं। स्वास्थ्य की दृष्टि से यह सर्वोत्तम ऋतु है। फसलें फूलने लगती हैं। आम के पेड़ मंजरियों से लद उठते हैं। कोयल वसंत आगमन का संदेश देती एक डाल से दूसरी पर उड़ती-फिरती है।

हमारे देश भारत जैसी ऋतु-विविधता अन्य देशों में नहीं है। हमें इन ऋतुओं के स्वागत को तैयार रहना चाहिए।

8. ऋतुराज वसंत

संकेत बिंदु : • ऋतुराज वसंत • स्वास्थ्य के लिए अनुकूल • नवजीवन का संचार • प्राकृतिक सुषमा • निष्कर्ष।

भारत ऋतुओं का देश है। यहाँ छह ऋतुएँ क्रमशः आती हैं और अपनी विविधता एवं विशेषता से सभी का मनमोह जाती हैं। यहाँ पाई जाने वाली ऋतुएँ हैं–ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमंत, शिशिर और वसंत। इनमें वसंत को ऋतुराज नाम से विभूषित किया जाता है। प्रत्येक ऋतु का औसतन समय दो महीने का होता है।

वसंत ऋतु का आगमन फाल्गुन के महीने में होता है। अब तक शिशिर की सर्दी जा चुकी होती है। अंग्रेज़ी महीने के हिसाब से यह मार्च-अप्रैल का महीना होता है। इस समय न गरमी होती है और न सरदी। यह ऋतु स्वास्थ्य के लिए अत्यंत अनुकूल होती है। इस समय प्राणी, पशु-पक्षी, यहाँ तक प्रकृति भी उल्लास से भर उठती है।

वसंत आते ही हेमंत और शिशिर ऋतु में ठूँठ हो चुके पेड़ और लताएँ नए वस्त्र धारण कर लेती हैं। उनमें कोंपलें फूट पड़ती हैं। वे लाल-हरे मुलायम पत्तों से ढँक जाती हैं। लताओं पर कलियाँ आ जाती हैं जो खिलकर फूल बन जाती हैं। सुंगधित हवा चलने लगती है, जिससे वातावरण मादक बन जाता है। जामुन, कटहल आदि मुकुलित होने लगते हैं। आमों पर मंजरियाँ आ जाती हैं जिनकी महक से वातावरण भर उठता है। ऐसे वातावरण में कोयल मतवाली होकर वसंत के स्वागत में कूँकती फिरती है। ऐसे में संयोगी जन मिलन को मचल उठते हैं। विरहणियों को वसंत ऋतु अच्छी नहीं लगती है। भारतेंदु हरिश्चंद ने लिखा है–

"सखि आयो वसंत रितून को कंत चहू दिसि फूल रही सरसों।
पुनि शीतल मंद सुगंध समीर सतावन हार भयो गर सों।
अब सुंदर साँवरो नंद किशोर कहैं 'हरिश्चंद' गयो घर सों।
परसों को बिताय दियो बरसों तरसों निज पाँय पिया परसों।।"

वसंत ऋतु आते ही सर्वत्र प्राकृतिक सुषमा बिखर जाती है। खेतों में दूर-दूर तक फैली फूली सरसों देखकर लगता है कि धरती ने पीली चूनर ओढ़ रखी है। गेहूँ, जौ, चना, मटर, अरहर आदि अन्न के भार से झुक जाते हैं। इस ऋतु में अनेक सब्ज़ियाँ–टमाटर, बैंगन, शिमला मिर्च, गोभी, मटर तैयार हो जाती हैं।

इस ऋतु में जब सर्वत्र मादक वातावरण होता है तो प्रकृति भी कैसे शांत रह सकती है। वह भी अँगड़ाई लेकर झूमने लगती है। शीतल, मंद, सुंगधित हवा लोगों और प्राणियों को उल्लास एवं उत्साह से भर देती है।

होली, वसंत पंचमी इस ऋतु के लोकप्रिय त्योहार हैं। होली के पहले से ही फाग का गायन शुरू हो जाता है। लोग हर्षोल्लास में डूबकर इन त्याहारों को मनाते हैं। सचमुच वसंत ऋतुराज है। हमें इसके स्वागत के लिए तैयार रहना चाहिए।

9. मेरा प्रिय खेल—क्रिकेट

संकेत बिंदु : • खेलों का महत्त्व • सर्वाधिक लोकप्रिय खेल क्रिकेट • खेल के नियम • क्रिकेट के प्रकार • प्रमुख खिलाड़ी।

खेल का नाम आते ही मन उत्साह एवं उल्लास से भर उठता है। खेलना-कूदना सभी को अच्छा लगता है, विशेषतः बच्चों द्वारा अपनी रुचि, आयु, पंसद आदि के आधार पर खेलों को पसंद किया जाता है और खेला जाता है। हालाँकि मुझे क्रिकेट सर्वाधिक पसंद है।

क्रिकेट को आउटडोर खेलों की श्रेणी में रखा जाता है। यह विश्व के कुछ ही देशों में खेला जाता है, परंतु इसे देखने और पसंद करने वाले बहुत से देश हैं। युवावर्ग इस खेल को पागलपन की हद तक पसंद करता है। जब यह खेल विश्व के दो देशों के बीच खेला जाता है तो स्टेडियम में मैच न देख पाने वाले लोग टेलीविजन और रेडियो से चिपके होते हैं।

क्रिकेट एक बड़े-से मैदान में खेला जाता है। मैदान के बीचोबीच बाईस गज लंबी पिच होती है। इसके निर्धारण के लिए दोनों किनारों पर तीन तीन विकेट खड़े किए जाते हैं। यह दो टीमों के बीच खेला जाता है। प्रत्येक टीम में ग्यारह-ग्यारह खिलाड़ी होते हैं। इस खेल में निर्णय देने के लिए दो अंपायर भी होते हैं। मैदान के बाहर एक तीसरा अंपायर होता है जो टीवी पर रिप्ले देखकर जटिल मामलों में फैसले देता है। एक टीम के खिलाड़ी मैदान में फैलकर गेंद को बाहर जाने से रोकते हैं और दूसरी टीम के दो खिलाड़ी बल्लेबाजी करते हैं।

क्रिकेट में हार-जीत का फैसला बनाए गए रनों के आधार पर होता है। जो टीम अधिक रन बनाती है या जिस टीम के कम खिलाड़ी आउट होते हैं, वही विजयी घोषित कर दी जाती है। बल्लेबाज द्वारा गेंद को हिट करने पर यदि वह निर्धारित सीमा रेखा छू जाती है तो चार रन और उसके ऊपर से होकर सीमा रेखा से बाहर गिरने पर छह रन माने जाते हैं।

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर क्रिकेट को आजकल तीन प्रारूपों में खेला जाता है—टेस्ट मैच, यह पाँच दिनों तक खेला जाता है। प्रत्येक दिन 90 ओवर अर्थात् 540 गेंदें फेंकनी होती हैं। इसमें हार-जीत का फैसला कम हो पाता है। अतः आजकल इसकी लोकप्रियता घटती जा रही है। इसका दूसरा प्रारूप एक दिवसीय मैच है, जिसमें प्रत्येक टीम पचास-पचास ओवर खेलती है। इसमें हार-जीत का फैसला हो जाता है जो बहुत ही लोकप्रिय है। इसका तीसरा प्रारूप टी-20 नाम से प्रसिद्ध है। इसमें प्रत्येक टीम 20-20 ओवर खेलती है। आजकल यह बहुत ही लोकप्रिय है। इसे फटाफट क्रिकेट भी कहा जाता है। भारत में खेले जाने वाला आई.पी.एल., जिसमें विश्व के प्रमुख देशों के मुख्य खिलाड़ी खेलते हैं, दुनियाभर में बहुत ही लोकप्रिय हो रहा है। अब तक आई.पी.एल. का 6 बार सफल आयोजन किया जा चुका है।

सचिन तेंदुलकर, महेंद्रसिंह धोनी, वीरेंदर सहवाग, जहीर खान, सुरेश रैना आदि प्रसिद्ध भारतीय क्रिकेट खिलाड़ी हैं।

10 वर्षा ऋतु का पहला दिन

संकेत बिंदु : • भारत की ऋतुएँ • वर्षा का इंतजार • गर्मी से प्रकृति एवं व्यक्ति का बुरा हाल • तेज वर्षा का वर्णन • वर्षा का आनंद।

भारत में छह ऋतुएँ पाई जाती हैं—ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमंत, शिशिर और वसंत। इनमें वसंत को ऋतुराज और वर्षा को 'ऋतुओं की रानी' कहा जाता है। वास्तव में 'वर्षा' ही वह ऋतु है जिसका लोगों द्वारा सर्वाधिक इंतजार किया जाता है।

कुछ समय पूर्व तक भारतीय कृषि को 'मानसून का जुआ' कहा जाता था। भारतीय कृषि पूरी तरह से वर्षा पर निर्भर होती थी तथा गर्मी के मारे पशु-पक्षी, मनुष्य सभी बेहाल हो जाते थे। छोटी-छोटी वनस्पतियाँ सूख जाती थीं, धरती गर्म तवा जैसी हो जाती थी, ऐसे में सभी अत्यंत उत्सुकता से वर्षा का इंतजार करते थे।

मुझे याद है—आषाढ़ माह के पंद्रह दिन यूँ ही तपते-तपते बीत चुके थे। गर्मी अपने चरम पर थी। सभी को वर्षा का इंतजार था, परंतु बादल मानो रूठ चुके थे। बच्चे कई बार टोली बनाकर जमीन पर लोट-लोटकर 'काले मेघा पानी दे, पानी दे गुड़धानी दे' कहकर बादलों को बुला चुके थे, पर सब बेकार सिद्ध हो रहा था।

दोपहर का समय था। अचानक बादलों के कुछ टुकड़ों ने पहले तो सूर्य को ढँक लिया, फिर वे पूरे आसमान में छा गए। देखते-ही-देखते हवा में शीतलता का अहसास होने लगा। दिन में ही शाम होने का एहसास होने लगा। अचानक बिजली चमकी, बादलों ने अपने आने की सूचना मानो सभी को दी और आसमान से शीतल बूँदें गिरने लगीं। ये बूँदें घनी और बड़ी होने लगीं। धीरे-धीरे झड़ी लगी। हवा के एक-दो तेज झोंके आए और वर्षा शुरू हो गई।

वर्षा का वेग बढ़ने के साथ-साथ हमारे मन में उत्साह एवं उल्लास बढ़ता जा रहा था। हम बच्चे कब रुकने वाले थे। हम नहाने के लिए घर से निकल आए। ग्रीष्म ऋतु ने हमें जितना तपाया था, वह सारी तपन हम वर्षा में शीतल कर लेना चाहते थे। वर्षा भी कितनी शीतल और सुखद लगती है, यह तो भीगने वालों से ही जाना जा सकता है, पर मेघ की गरजना सुनकर आम आदमी क्या सीता विहीन श्रीराम भी डरने लगे थे–

"घन घमंड गरजत नभ घोरा।
प्रिया हीन डरपत मन मोरा।।"

दो घंटे की लगातार वर्षा में सब कुछ जलाशमय हो गया। खेत, बाग, गलियाँ नीची जगहें तालाब का रूप धारण कर चुकी थीं। पेड़-पौधे नहाए-धोए प्रसन्नचित्त लगने लगे थे। लोगों के चेहरों पर छायी मायूसी गायब हो चुकी थी। जंगल की ओर से मयूरों की कर्णप्रिय आवाज़ अब भी आ रही थी। किसान खेत की ओर चल पड़े। ऐसे में हम बच्चे कहाँ शांत बैठने वाले थे, हम भी कागज की नावें लिए तालाब की ओर चल पड़े क्योंकि हमें भी जल-क्रीड़ा का आनंद लेना था।

11. पुस्तक मेलों की उपयोगिता

संकेत बिंदु : • पुस्तकें ज्ञान का भंडार • पुस्तक मेलों का उद्देश्य • बढ़ती लोकप्रियता • उपयोगिता • ज्ञान के आलोक को फैलाने में पुस्तक मेलों का योगदान।

पुस्तकें ज्ञान का भंडार होती हैं। इनमें हर तरह का ज्ञान भरा होता है। ये मनुष्य की सबसे अच्छी मित्र होती हैं। पुस्तकें सच्चे पथप्रदर्शक का काम करती हैं जो मनुष्य को गलत राह पर चलने से सदैव रोकती हैं। जनसाधारण तक ये सुगमता से पहुँच सकें, इसके लिए समय-समय पर पुस्तक मेलों का आयोजन किया जाता है।

लोगों की पुस्तकों से निकटता बढ़ाने के लिए, उनमें पठन की अभिरुचि पैदा करने के उद्देश्य से पुस्तक और पाठकों के मध्य दूरी कम करना आवश्यक है। इसके अलावा पुस्तकें छपकर यदि दुकानों तक सीमित रह जाती हैं या पुस्तक केंद्रों की शोभा बढ़ाती हैं तो आम आदमी उनसे अनभिज्ञ ही रह जाता है। ऐसे में पुस्तकों का प्रचार-प्रसार करना जरूरी हो जाता है। इस उद्देश्य के पूर्ति में पुस्तक मेले महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। अब ऐसे मेलों की लोकप्रियता बढ़ती जा रही है।

पुस्तक मेले कितने उपयोगी हैं? इस पर दो राय हैं। पहली राय यह कि ये मेले दिखावा बनकर रह जाते हैं। पाठक वर्ग इन तक नहीं पहुँचता है। ये मेले वास्तविक उद्देश्य की पूर्ति में सफल नहीं हो पाते हैं। इसके विपरीत दूसरी राय यह है कि पुस्तक मेले अत्यंत उपयोगी होते हैं। जनसाधारण तक पुस्तकें पहुँचाने, पुस्तकों के विज्ञापन प्रकाशकों की बिक्री बढ़ाने का, ये सशक्त माध्यम हैं।

मेरे विचार से पुस्तक मेलों का आयोजन अत्यंत उपयोगी होता है। कई बार ऐसा होता है कि एक पुस्तक को खोजने के लिए हमें बाज़ार की कई दुकानों पर चक्कर लगाना पड़ता है। उपलब्ध न होने पर किसी अन्य बाज़ार में चक्कर लगाना पड़ता है। पुस्तक मेलों में एक ही प्रयास में विभिन्न प्रकाशकों, लेखकों, सुविख्यात विचारकों की पुस्तकें मिल जाती हैं। यहाँ देश के ही नहीं विदेश के प्रकाशक भी अपना स्टॉल लगाते हैं, जिससे दुर्लभ पुस्तकें भी मिल जाती हैं। इतना ही नहीं ग्राहकों को लुभाने और अपनी बिक्री बढ़ाने के लिए वे विशेष छूट भी देते हैं। ऐसे में पाठकों और क्रेताओं को दोहरा लाभ होता है।

पुस्तक मेलों का आयोजन और भी उपयोगी एवं लोकप्रिय हो सकता है, यदि इन्हें शहर में अनेक जगहों पर आयोजित किया जाए तथा इनके आयोजन के पूर्व संचार माध्यमों से विधिवत लोगों को जानकारी दी जाए। पुस्तकों को कम-से-कम मूल्य पर बेचा जाए, जिसमें प्रकाशकों को भी घाटा भी न हो और पाठकों को लाभ भी मिल जाए।

पुस्तक मेलों की उपयोगिता निस्संदेह है। गरीब विद्‌यार्थियों और पाठकों के लिए इनकी उपयोगिता और भी बढ़ जाती है। ज्ञान का आलोक फैलाने के लिए ऐसे मेलों का आयोजन किया जाना आवश्यक है।

12. राष्ट्रभाषा हिंदी की दशा

संकेत बिंदु : • भूमिका • राष्ट्रभाषा की दुर्दशा के कारण • क्षेत्रवाद एवं स्वार्थपरता की वजह से हिंदी का विकास अवरुद्‌ध • निष्कर्ष।

"निज भाषा उन्नत रहे, सब भाषन को मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटे न हिय को सूल।।"

भारतेंदु हरिश्चंद रचित ये पंक्तियाँ भाषा की महत्ता प्रतिपादित करती हैं कि अपनी भाषा की उन्नति, विकास और ज्ञान के बिना हमारी स्थिति अच्छी नहीं होगी। ऐसे में हमें अपनी भाषा को सम्मानजनक स्थान देना चाहिए।

यह देश और देशवासियों का दुर्भाग्य रहा है कि देश को लंबे समय तक अंग्रेज़ों की गुलामी झेलनी पड़ी और उससे पूर्व उससे भी लंबे समय तक मुसलमान आक्रांताओं का कुशासन झेलना पड़ा। यहाँ हर विदेशी शासक ने अपनी सुविधा के लिए अपनी-अपनी भाषा को देशवासियों पर थोपा और यहाँ की भाषा को दबाने और कुचलने का प्रयास किया। मुसलमानों ने अपने राजकाज की भाषा उर्दू-फ़ारसी बनाई और लंबे समय तक देशवासी उसे सुनते-सहते रहे। आज भी न्यायालयों की भाषा में ऐसे शब्दों की बहुलता देखी जा सकती है।

अंग्रेज़ों ने भी अपने शासनकाल में अंग्रेज़ी को बढ़ावा दिया। उन्होंने यहाँ के स्कूल-कॉलेजों में इसके शिक्षण की व्यवस्था की और अंग्रेज़ी जानने वालों को अच्छी नौकरियाँ देने का प्रस्ताव रखा। ऐसी दशा में हिंदी गर्त में गिरती गई।

भारतवासियों को आशा ही नहीं वरन् विश्वास था कि स्वतंत्रता मिलने के बाद सब ठीक हो जाएगा, परंतु स्वतंत्रता के पश्चात् हिंदी को राजभाषा का दर्जा देने के बाद भी 15 वर्ष तक अंग्रेज़ी को कामकाज की भाषा बनाए रखने पर विचार-विमर्श हुआ, परंतु दुर्भाग्य से आज करीब 66 साल बीत जाने पर भी हिंदी वह स्थान न प्राप्त कर सकी जिसकी वह अधिकारिणी थी। इस स्थिति के लिए अंग्रेज़ नहीं हम भारतीय ही जिम्मेदार हैं।

अंग्रेज़ी के जानकारों को अंग्रेज़ों ने उच्च पदों पर नियुक्त किया था। वे अपना एकाधिकार बनाए रखना चाहते थे। उनकी देखा-देखी नेतागण, अधिकारी, कर्मचारी, क्षेत्रीयता के पक्षधर अलगाववादी और कुछ स्वार्थी तत्त्व भी ऐसा ही चाहने लगे और एकमत से हिंदी का विरोध मुखरित कर दिया। हमारे देश के कुछ तथाकथित भाग्यविधाताओं ने भी उनके स्वर में स्वर मिलाया और भाषावाद के नाम पर लोगों को उकसाया। दक्षिण भारतीय राज्य और पश्चिम बंगाल के लोगों ने तर्क दिया कि 'हिंदी के विकास से अन्य भाषाएँ पिछड़ जाएँगी' और अपना विरोध स्वर जारी रखा। वे अंग्रेज़ी तो सीख सकते हैं पर देश की राष्ट्रभाषा नहीं।

सत्तालोलुप सरकार को भी अपने वोट बैंक की चिंता थी। उसने भी बहुसंख्यक हिंदीभाषियों की भावनाओं की उपेक्षा की। आज भी दो प्रतिशत लोग तकनीकी और उच्च पदों पर अपने अंग्रेज़ी ज्ञान के कारण आसीन हैं, शेष लोग उपेक्षा का शिकार हो रहे हैं। अब वह समय आ गया है कि सरकार और अन्य जिम्मेदार लोग हिंदी को उसका गौरवपूर्ण स्थान दिलाएँ।

13. हमारे विद्‌यालय का वार्षिकोत्सव

संकेत बिंदु : • विद्‌यालय का महत्त्व • वार्षिकोत्सव की तैयारी और अध्यापकों का योगदान • वार्षिकोत्सव का वर्णन।

विद्‌यालय ज्ञान के मंदिर होते हैं। यहाँ समाजोपयोगी नागरिक बनाने के लिए विविध विषयों का ज्ञान दिया जाता है, परंतु केवल पुस्तकीय शिक्षण से सर्वांगीण विकास नहीं हो सकता है, इसलिए पाठ्य सहगामी क्रियाएँ भी कराई जाती हैं। विद्‌यालय के वार्षिकोत्सव में इन क्रियाओं को दिखाने का अवसर मिलता है। हमारे विद्‌यालय में वार्षिक उत्सव का आयोजन फरवरी माह के प्रथम सप्ताह में किया गया।

किसी भी विद्यालय का वार्षिकोत्सव उसका सबसे बड़ा सांस्कृतिक कार्यक्रम होता है, जिसकी तैयारी महीने भर पहले से शुरू करवाई जाती है। इसमें विद्यालय के कुछ शिक्षकों का विशेष योगदान होता है। हमारे विद्यालय के योगाध्यापक ने बच्चों को येगासन के लिए तैयार किया। पी.टी. अध्यापक ने पी.टी. ड्रिल की तैयारी। हिंदी अध्यापक ने नाटक और लोकगीत का अभ्यास कराया तो संगीत अध्यापक ने लोकनृत्य, लोकगीत गायन और सरस्वती वंदना का। चित्रकला शिक्षक को परिधान और मंच-सज्जा का काम सौंपा गया। इसके अलावा विद्यालय की साफ-सफाई, सज्जा, अतिथियों के बैठने, जलपान-व्यवस्था आदि काम अन्य अध्यापकों को दिया गया।

वार्षिकोत्सव के लिए नियत तिथि तक सारा काम पूरा हो गया। कार्यक्रम स्थल पर देशभक्तिपूर्ण गीत बजने लगे। बच्चे अपने-अपने अभिभावकों के साथ आकार नियत स्थान पर बैठने लगे। अध्यापक और कुछ छात्र अपनी जिम्मेदारी का कुशल निर्वहन कर रहे थे। इस समय मार्ग में खिले फूलयुक्त गमले, रंगीन झंडे, दीवारों पर लिखी सूक्तियाँ, सब कुछ मिलाकर सुरम्य वातावरण बना रहे थे।

इस वार्षिकोत्सव में क्षेत्र के विधायक को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया था। वे नियत समय ढाई बजे विद्यालय परिसर में चमचमाती कारों के काफिले के साथ आए। प्रधानाचार्य तथा कुछ अध्यापक उन्हें समारोह स्थल तक ले गए। वहाँ विद्यालय प्रमुख तथा कुछ वरिष्ठ अध्यापकों ने उनका स्वागत किया। इसके उपरांत उन्होंने दीप प्रज्वलन किया। छात्रों ने माँ सरस्वती की उपासना करते हुए 'अंब विमल मति दे' का भावपूर्ण गायन किया। इसके बाद छात्रों ने स्वागत-गान प्रस्तुत किया।

अब बारी थी सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुति की। बच्चों ने स्त्री-शिक्षा पर नाटक प्रस्तुत किया—'बुझे न शिक्षा की ये मशाल।' इसके बाद लोकगीत, लोकनृत्य, योगासन के मोहक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। प्रधानाचार्य जी ने वार्षिक रिपोर्ट पढ़ी। विधायक जी ने अपने लघु भाषण में शिक्षा के महत्त्व पर प्रकाश डाला। प्रधानाचार्य जी ने आए हुए अतिथियों का आभार प्रकट करते हुए धन्यवाद ज्ञापन किया। अंत में छात्रों को मिष्ठान्न वितरण करते हुए इसका समापन किया गया है। उपस्थित लोगों ने इस वार्षिकोत्सव की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

14. रेलवे प्लेटफार्म का दृश्य

संकेत बिंदु : • भूमिका • पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशन का आँखें देखा वर्णन • टिकट लेने के दौरान संघर्ष • कोलाहलपूर्ण वातावरण • भीड़ देखकर वापस घर आना।

घूमना-फिरना मनुष्य के स्वभाव का अंग है। वर्तमान की भागमभाग वाली जिंदगी में उसे कुछ ज्यादा ही घूमने-फिरने का अवसर मिल जाता है। पिछली गर्मियों में मुझे भी अपने मित्र के साथ हरिद्वार जाने का अवसर मिला, जब मैंने रेलवे स्टेशन पर ऐसा दृश्य देखा जो लंबे समय तक याद रहेगा।

रेल यात्रा द्रुतगामी और आरामदायक साधन है, यही सोचकर हम दोनों मित्रों ने रेल से हरिद्वार जाने का निर्णय लिया। जल्दी में वहाँ जाने का कार्यक्रम बनाने के कारण हमारा आरक्षण नहीं हो पाया और हमें अनारक्षित डिब्बे में यात्रा करना था। हमें रात दस बजे की ट्रेन पकड़नी थी। अतः हम आटो से साढ़े आठ बजे ही पुरानी दिल्ली स्टेशन पर पहुँच गए।

मैं रेलवे स्टेशन के बाहर का दृश्य देखकर चकित रह गया। भव्य एवं विशाल स्टेशन के बाहर सड़क के किनारे स्कूटर, मोटर साइकिल, आटोरिक्शा, टैक्सी की भीड़ थी। कुछ सवारियाँ ला रहे थे तो कुछ गंतव्य की ओर जा रहे थे और बाकी सवारियों के इंतजार में खड़े थे। खाली जगहों पर लोग चादर बिछाए लेटे थे। बड़ी मुश्किल से हम अंदर गए। टिकट काउंटर पर लंबी-लंबी कतारें लगी थीं। कुछ लोग खिड़की के पास बिना कतार के टिकट लेने की अनधिकृत चेष्टा कर रहे थे। हम पसीने में नहा रहे थे। 'जेबकतरों से सावधान' का बोर्ड पढ़कर मैं गर्मी को भूलकर सजग हो उठा। करीब चालीस मिनट बाद हमारा नंबर आया। हम टिकट लेकर प्लेटफार्म की ओर चले।

प्लेटफार्म पर कुछ लोगों के पास इतना सामान था कि दो-दो कुली उन्हें उठा रहे थे। प्लेटफार्म पर सामान और आदमियों के कारण तिल रखने की भी जगह नहीं बची थी। धक्का-मुक्की के कारण बुरा हाल था। चारों ओर शोर-ही-शोर था। कहीं बेंडर्स

की आवाज़ें तो किसी अन्य प्लेटफार्म पर आती-जाती ट्रेन का। यात्रियों का शोर इन सबसे बढ़कर था। अत्यंत कोलाहलपूर्ण वातावरण था।

प्लेटफार्म पर अत्यंत छोटे-छोटे स्टॉल थे। इन पर अखबार विभिन्न प्रकार की पत्र-पत्रिकाएँ, चाय, बिस्कुट, पान, सिगरेट, खाने की वस्तुएँ (खाना), शीतल पेय, पर्स, बेल्ट, रूमालें, सुराहियाँ, गिलास आदि बिक रहे थे। लोग पानी की बोतलें, चाय, खाने-पीने की वस्तुएँ अधिक खरीद रहे थे, पर अधिक दाम लेने के कारण दुकानदारों से लड़-झगड़ रहे थे। इतनें में दूसरी ओर पटरी पर ट्रेन आकर रुकी। ठहरी भीड़ में हलचल मच गई। धक्का-मुक्की मच गई। यात्री चढ़ने-उतरने लगे और कुली डिब्बों की ओर भागने लगे। भगदड़ जैसा दृश्य उत्पन्न हो गया। इसी बीच हरिद्वार जाने वाली ट्रेन आ गई। जनरल डिब्बे की भीड़ देख हमारे पसीने छूट गए। लोग पहले से ही गेट और पायदान पर लटके थे। लाख प्रयास के बाद भी हम डिब्बे में न जा सके। मेरी जेब कट चुकी थी। मित्र के पास बचे पैसों से हम किसी तरह घर लौटकर आ सके।

15. जीना मुश्किल करती महँगाई

संकेत बिंदु : • दीर्घकालिक परेशानी—महँगाई • निम्न और मध्य-वर्ग सर्वाधिक परेशान • राजनैतिक पार्टियाँ व नेता जिम्मेदार • महँगाई बढ़ने के कारण • महँगाई रोकने के उपाय।

संघर्ष का दूसरा नाम ही जीवन है। मनुष्य को जीवन में अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इनमें से कुछ समस्याएँ अल्पकालिक होती हैं तो कुछ आजीवन चलती हैं। गरीब और मध्यम वर्ग के लिए ऐसी ही दीर्घकालिक परेशानी का नाम है—महँगाई।

वर्तमान में निम्न और मध्यमवर्ग महँगाई से सबसे ज्यादा परेशान है। यह मनुष्य की मूलभूत आवश्यकताओं रोटी, कपड़ा, और मकान पर सर्वाधिक चोट करती है। सरकारी आँकड़ों में यह भले ही स्थिर दिखे या अल्पकाल के लिए कुछ कम हो पर सत्य तो यह है कि निरंतर बढ़ती ही रहती है। सरकार भी अपना पल्ला झाड़ने के उद्देश्य से पहले तो मौसम, प्रकृति आदि के प्रतिकूल होने का बहाना बनाती है, फिर इसका दोष दूसरों पर डालकर अपना पल्ला झाड़ लेती है।

चुनाव करीब आते ही हमारे तथाकथित भाग्यविधाता गरीबों का वोट पाने के लालच में महँगाई कम करने का दिवास्वप्न दिखाते हैं, पर चुनाव जीतते ही अपनी सुविधाएँ अपना वेतन-भत्ता बढ़ाकर उसका भार आम जनता पर डाल देते हैं। चुनाव से पूर्व विभिन्न राजनैतिक पार्टियाँ औद्योगिक इकाइयों से गुप्त से चंदे के नाम पर मोटी रकम वसूलती हैं। चुनाव के बाद इन इकाइयों के मालिक अपने उत्पादों पर मनमर्जी मूल्य वृद्धि करते हैं। उन्हें कोई रोकने वाला नहीं होता है क्योंकि रिश्वत रूपी चंदा पहले ही दिया जा चुका होता है।

महँगाई बढ़ने का प्रमुख कारण है—माँग और पूर्ति के बीच असंतुलन होना। जब किसी वस्तु की आपूर्ति कम होती है और माँग बढ़ती है तो वस्तुओं का मूल्य स्वयमेय बढ़ जाता है क्योंकि अधिक क्रयशक्ति रखने वाले लोग उसे ऊँचे दाम पर खरीद लेते हैं। प्राकृतिक प्रकोप जैसे—बाढ़, सूखा, अतिवृष्टि भूकंप आदि महँगाई बढ़ाने में सहायक होते हैं। इनसे खेती की उपज घट जाती है और खाद्यान्न व अन्य वस्तुएँ बाहर से मँगानी पड़ती हैं। जमाखोरी, काला बाज़ारी आदि मानव निर्मित कारण हैं। इसके अलावा दोषपूर्ण वितरण-प्रणाली, असफल सरकारी नियंत्रण तथा मनुष्य की स्वार्थपूर्ण प्रवृत्ति भी इसके लिए उत्तरदायी हैं।

महँगाई रोकने के लिए सरकार और व्यापारी वर्ग दोनों को आगे आना होगा। सरकार को वितरण-प्रणाली सुव्यवस्थित तथा सुचारु बनानी होगी। प्राकृतिक आपदाओं से प्रभावित क्षेत्रों से दैनिकोपयोगी वस्तुएँ शीघ्रातिशीघ्र उपलब्ध करानी होंगी। जमाखोरों और कालाबाजारी करने वाले पर कड़ा जुर्माना लगाते हुए कठोर दंड का प्रावधान होना चाहिए। इसके अलावा सरकार को अपने खर्चों में कटौती करना चाहिए। धनाढ्य वर्ग को अपनी विलासितापूर्ण जीवन शैली में बदलाव लाना चाहिए तथा ऐसे लोगों के बारे में भी सोचना चाहिए जो अपनी मूलभूत आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए संघर्षरत हैं।

16. विज्ञान की अद्‌भुत खोज कंप्यूटर

संकेत बिंदु : • विज्ञान का चमत्कार • कंप्यूटर की आवश्यकता • अद्‌भुत क्रांति • कंप्यूटर का वर्णन • उपयोगिता • निष्कर्ष।

विज्ञान ने मनुष्य को नाना प्रकार की वस्तुएँ उपलब्ध कराकर उसका जीवन सुखमय बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ रखी है। आज जिधर भी दृष्टि डालिए उसका करिश्मा नजर आता है। उसने अनेक चमत्कारी वस्तुएँ उपलब्ध कराई हैं, मनुष्य जिनकी कल्पना किया करता था। ऐसे ही चमत्कारी यंत्रों में एक है—कंप्यूटर।

वर्तमान युग को कंप्यूटर का युग कहें तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। चारों ओर कंप्यूटर का बोलबाला है। यह आज के युग की आवश्यकता बन गया है। प्रायः सभी छोटे-बड़े कार्यालयों में इसका अनिवार्य रूप से प्रयोग होने लगा है। जैसे पहले मेज पर रखी फाइलें देखकर लगता था कि यह कोई ऑफिस है, आज उसी प्रकार कंप्यूटर देखकर यह अनुमान सहज लगाया जा सकता है।

कंप्यूटर नित नया आकर्षक रूप और आकार ग्रहण करते जा रहे हैं। पहले इनका बड़ा-सा मॉनीटर परी मेज को घेर लेता था। मेज के नीचे इनका सी.पी.यू. तथा अन्य उपकरण रखे जाते थे। मॉनीटर के सामने बड़ा सा की-बोर्ड रखकर काम किया जाता था पर आज विज्ञान के प्रभाव के कारण मॉनीटर एक दम पतले और छोटे हो गए हैं जिनमें सी.पी.यू. भी शामिल होता है। इनका बोर्ड छोटा और आकर्षक बन गया है। अब इन्हें कम जगह में रखा जा सकता है।

आज कंप्यूटर पर लगभग हर प्रकार का काम किया जा रहा है। लेखा विभाग हो या अन्य विभाग, फाइलें रखने, बनाने, खोने, सँभालने, दीमकों के चट जाने की समस्या खत्म हो गई है। कर्मचारियों के वेतन बिल, कर्मचारियों का लेखा-जोखा, लाखों-करोड़ों खातों का काम इसमें सुरक्षित रहता है। बस एक क्लिक करते ही मन चाहा आँकड़ा हमारे सामने होता है। रेल, मोटर, वायुयान आदि के टिकटों का आरक्षण कंप्यूटर की मदद से किया जाता है। बिजली, पानी, विभिन्न प्रकार के टैक्स, फोन आदि के बिल,-राशन कार्ड, जन्म-मृत्यु प्रमाण इसकी मदद से बनाए जाते हैं। विद्‌यालयों के अभिलेख, उनसें संबंधित पत्राचार एवं प्रमाण-पत्रों का लेन-देन अब कंप्यूटर ने सुगम कर दिया है। चिकित्सा क्षेत्र में कंप्यूटर ने क्रांति ला दी है। विभिन्न जाँचों की रिपोर्ट इसकी मदद से बनने लगी हैं, जिसमें गलतियों की संभावना न के बराबर होती है। पुस्तकीय छपाई और चित्रांकन को कंप्यूटर ने नया रूप देकर आकर्षक बना दिया है।

कंप्यूटर ने मनोरंजन को नया रूप प्रदान किया है। अब बच्चों को धूल-मिट्‌टी और धूप में खेलने की आवश्यकता नहीं रही। वे घर में कंप्यूटर पर विविध प्रकार के खेल-खेलकर अपना मंनोरंजन करते हैं।

कंप्यूटर समय, धन, और श्रम बचाने वाला अद्‌भुत उपकरण है। यह दैनिक जीवन की जरूरत बनता जा रहा है, पर हमें इसके साथ अधिक समय बिताने से बचना चाहिए।

17. विज्ञापन—कितने सच्चे कितने झूठे

या

विज्ञापनों का जनजीवन पर प्रभाव

संकेत बिंदु : • विज्ञापन का अर्थ • विज्ञापन का प्रभाव • विज्ञापन से लाभ • विज्ञापन भारतीय संस्कृति के लिए घातक।

मनुष्य अपने जीवन को सुख-सुविधामय बनाने के लिए विभिन्न वस्तुओं का उपयोग और उपभोग करता है। उसे लगने लगा है कि उपभोग ही सुख है। उस पर पाश्चात्य उपभोक्तावाद का असर हो रहा है, इसी का फायदा उठाकर उत्पादक अपनी वस्तुओं को बढ़ा-चढ़ाकर उसके सामने प्रस्तुत करते हैं। इसे ही विज्ञापन कहा जाता है। आजकल इसका प्रचार-प्रसार इतना अधिक हो गया है कि वर्तमान को विज्ञापन का युग कहा जाने लगा है।

विज्ञापन ने हमारे जीवन को अत्यंत गहराई से प्रभावित किया है। यह हमारा स्वभाव बनता जा रहा है कि दुकानों पर वस्तुओं के उन्हीं ब्रांडों की माँग करते हैं जिन्हें हम समाचार पत्र, दूरदर्शन या पत्र-पत्रिकाओं में दिए गए विज्ञापनों में देखते हैं। हमने विज्ञापन में किसी साबुन या टूथपेस्ट के गुणों की लुभावनी भाषा सुनी और हम उसे खरीदने के लिए उत्सुक हो उठते हैं।

विज्ञापनों की भ्रामक और लुभावनी भाषा बच्चों पर सर्वाधिक प्रभाव डालती है। बच्चे चाहते हैं कि वे उन्हीं वस्तुओं का प्रयोग करें जो शाहरुख खान, अमिताभ बच्चन या प्रियंका चोपड़ा द्वारा विज्ञापित करते हुए बेची जा रही हैं। वास्तव में बच्चों का कोमल मन और मस्तिष्क यह नहीं जान पाता है कि इन वस्तुओं के सच्चे-झूठे बखान के लिए ही उन्होंने लाखों रुपये एडवांस में ले रखे हैं।

यह विज्ञापनों का असर है कि हम कम गुणवत्ता वाली पर बहुविज्ञापित वस्तुओं को धड़ल्ले से खरीद रहे हैं। दुकानदार भी अपने उत्पाद-लागत का बड़ा हिस्सा विज्ञापनों पर खर्च कर रहे हैं और घटिया गुणवत्ता वाली वस्तुएँ भी उच्च लाभ अर्जित करते हुए बेच रहे हैं। उत्पादनकर्ता मालामाल हो रहे हैं और उपभोक्ताओं की जाने-अनजाने जेब कट रही है।

विज्ञापन का लाभ यह है कि इससे हमारे सामने चुनाव का विकल्प उपस्थित हो जाता है। किसी उत्पादक विशेष का बाज़ार से एकाधिकार खत्म हो जाता है। उपभोक्ता वस्तुओं के मूल्य और गुणवत्ता का तुलनात्मक अध्ययन कर आवश्यक वस्तुएँ खरीदते हैं, परंतु इसके लिए इनकी लुभावनी भाषा से बचने की आवश्यकता रहती है।

विज्ञापन भारतीय संस्कृति के लिए हितकारी नहीं। आज कोई भी विज्ञापन हो या किसी आयुवर्ग के विज्ञापन हों, पुरुषोपयोगी वस्तुओं का विज्ञापन हो, बच्चों या महिलाओं के प्रयोग की वस्तुओं का विज्ञापन हो, नारी के नग्नदेह के बिना पूरा नहीं होता। अनेक विज्ञापन परिवार के सदस्यों के साथ नहीं देखे जा सकते हैं। एक ओर विज्ञापनों से वस्तुओं का मूल्य बढ़ रहा हैं, तो दूसरी ओर बच्चों का कोमल मन विकृत हो रहा है और वे जिद्दी होते जा रहे हैं। विज्ञापनों में छोटे होते जा रहे नायक-नायिका के वस्त्रों को देखकर युवावर्ग में भी अधनंगानप बढ़ रहा है। गरीब और मध्यम वर्ग का वजट विज्ञापनों के कारण बिगड़ रहा है। हमें बहुत सोच-समझकर ही विज्ञापनों पर विश्वास करना चाहिए।

18. मतदान केंद्र का आँखों देखा वर्णन

संकेत बिंदु : • भारत एक लोकतांत्रिक देश • दिल्ली नगर निगम का चुनाव 2012 • मतदान केंद्र का वर्णन • दो पार्टियों में झगड़ा • पुलिस द्वारा बीच-बचाव।

स्वतंत्रता के बाद भारत में लोकतंत्र की स्थापना हुई। भारत एक लोकतांत्रिक देश बना। लोकतांत्रिक सरकार के गठन में लोगों की भागीदारी सुनिश्चित करने के उद्देश्य निष्पक्ष मतदान का प्रावधान किया गया। जनता अपना बहुमूल्य मत देकर अपने प्रतिनिधि चुनकर राज्य की विधानसभाओं और संसद में भेजती है। अपनी भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए लोग मतदान करते हैं।

वर्तमान में दिल्ली को राज्य का दर्जा प्रदान किया गया है, जिसकी विधानसभा और नगर निगम के लिए प्रत्येक पाँच वर्ष पर चुनाव होते हैं। 2012 में हुए नगर निगम के चुनाव के एक मतदान केंद्र पर मुझे पिता जी के साथ जाने का अवसर मिला, जहाँ मुझे यह विशेष अनुभव प्राप्त हुआ।

मैं चुनाव के दिन लगभग 11 बजे मतदान केंद्र पहुँचा। यह केंद्र द्वारका में स्थित था। मतदान केंद्र के बाहर सड़क पर बहुत से लोग और विभिन्न पार्टियों के कार्यकर्ता जमा थे। वे अपनी-अपनी पार्टी के झंडे और बैनर टाँगे थे। कुछ तख्त पर यूँ बैठे थे, मानो दुकानदार हों। वे लोगों को पर्चियों देने का प्रयास कर रहे थे, जिन पर पता, मतदाता क्रमांक, बूथ संख्या आदि लिखे थे। मैंने उत्साहपूर्वक पिता जी के नाम की पर्ची ले ली।

मतदान केंद्र के बड़े से द्वार पर सशस्त्र जवान तैनात थे। वे गहन तलाशी के बाद ही अंदर प्रवेश की अनुमति दे रहे थे। उन्होंने पिता जी के अनुरोध पर मुझे भी अंदर जाने दिया। अंदर कई-कई कतारें लगी थीं। सभी कतारों के लिए अलग-अलग बूथ बने थे। धूप थी, पर मन में उमंग थी, सो मैं भी पिता जी के साथ लाइन में लग गया। इतने में एक बूथ पर अंदर कुछ लोगों के झगड़ने की आवाज़ें आने लगीं। बाद में पता चला कि किसी पार्टी का एजेंट किसी को विशेष चुनाव-चिह्न का बटन दबाने को कह

गया था, जिस पर दूसरे लोगों ने आपत्ति की। मैंने देखा कि सभी कतारों में युवा, प्रौढ़ और वृद्‌ध उत्साहपूर्वक अपनी बारी की प्रतीक्षा कर रहे थे।

करीब बीस मिनट बाद मैं भी पिता जी के साथ अंदर गया। वहाँ आवश्यक कार्यवाही के बाद कोने में रखी ई.वी.एम. का बटन दबाते ही विप बज उठी और मतदान हो गया। मैं पिता जी के साथ हर्षोल्लास के साथ बाहर आ गया। अभी कैंपस के बाहर निकल ही रहा था कि कुछ कार्यकर्ता अपने नेता के समर्थन में नारे लगाने लगे। अपने नेता को देख वे जोश में होश खोकर दूसरी पार्टी के नेता को अपशब्द कह बैठे, जिसका उस पार्टी के कार्यकर्ताओं ने भी अपशब्दों से ही जवाब दिया। अब तक झगड़ा शुरू हो गया। वे मारपीट पर उतारू हो गए, पर सतर्क पुलिस के जवानों ने स्थिति सँभाल ली और उनके नेता को वहाँ से हटाया, तब स्थिति सामान्य हो सकी।

मतदान केंद्र का एक नया अनुभव लिए मैं घर वापस आ गया।

19. भारतीय किसान

संकेत बिंदु : • किसानों की भूमिका • किसानों की गरीबी का कारण • अन्नदाता किसान • किसानों का शोषण • किसानों के उत्थान के लिए कारगर उपाय।

समाज में सुव्यवस्था बनाए रखने के लिए लोगों के बीच काम का बँटवारा किया गया। खेती में काम कर अनाज उगाने वालों को किसान नाम दिया गया। समाज के पोषण में इनकी भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण रही है। दुर्भाग्य से भारतीय किसान की दशा उतनी उन्नत नहीं हो पाई, जितनी होनी चाहिए।

भारत की 80% जनसंख्या गाँवों में रहती है। इनकी आजीविका का आधार कृषि है। भारतीय कृषक के पास साल के कुछ महीनों में तो बहुत काम रहता है, पर कुछ महीनों में बिलकुल खाली बैठने को विवश रहता है। इसके अलावा यहाँ कृषि मानसून पर निर्भर रहती है। यदि मानसून अच्छा रहा तो अच्छी खेती अन्यथा खेती से पूँजी निकालना भी कठिन हो जाता है। आय का एक नियमित और निश्चित स्रोत न होने के कारण वह गरीबी से मुक्त नहीं हो पाता है।

किसान का महत्त्व अन्य पेशा करने वालों से कहीं अधिक है। वह स्वयं भूखा रहकर देशवासियों और सेना के जवानों का पोषण करता है। इसी स्वभाव के कारण उसे अन्नदाता की उपाधि दी गई है। इस अन्नदाता की दुखद स्थिति और परिश्रमी स्वभाव के बारे में बताने के लिए 'दिनकर' जी ने पंक्तियाँ लिखीं–

"यदि तुम होते दीन कृषक, तो आँख तुम्हारी खुल जाती।
जेठ माह के तप्त धूप में, अस्थि तुम्हारी घुल जाती।
दाने बिना तरसते रहते, हरदम दुखड़े गाते तुम।
मुँह से बात न आती कैसे, बढ़-बढ़ बात बनाते तुम।"

भारतीय किसान सर्दी, गर्मी, बरसात की परवाह किए बिना खेत में सवेरे से शाम तक काम करता है। वह अपने कठोर परिश्रम से ऋषियों-मुनियों को भी मात देता है। पत्थर-सी जमीन को मुलायम बनाना, बीज बोना, अथक परिश्रम से तैयार करना, काटना आदि उसकी दिनचर्या का अंग है।

कितने दुर्भाग्य की बात है कि देश का अन्नदाता शोषण के शिकार हैं। उनके साथ छल-कपट किया जाता है। नेता उनके कल्याण की बात कहकर वोट लेते हैं, तो बिचौलिए उनकी कमाई का मोटा हिस्सा अपनी जेब में रखते हैं। गाँव का साहूकार कुत्तों की तरह उनकी हड्डियाँ तक चूसने को तैयार रहता है। समय पर उनकी फसल का उचित मूल्य न मिल पाना, रही-सही कसर पूरी कर देता है। उन्हें छोटी-छोटी सुविधाओं के लिए भी मोहताज होना पड़ता है।

सरकार को किसानों के लिए कल्याणकारी योजनाएँ बनानी चाहिए। कम ब्याज दर पर ऋण की उपलब्धता होनी चाहिए। उनकी उपज का मूल्य मिलना चाहिए तथा रासायनिक खाद, उन्नतिशील बीज, कीटनाशक दवाएँ, आधुनिक कृषि-यंत्र अनुदानित दरों पर मिलना चाहिए। हमें देश के अन्नदाता के प्रति आदर भाव रखना चाहिए।

20. लड़की-लड़के में भेद कितना उचित

अथवा

लड़का-लड़की एक समान

संकेत बिंदु : • भूमिका • लड़का-लड़की में भेद के धार्मिक कारण • वर्तमान में लड़कियाँ लड़कों से आगे • लिंग-भेद सामाजिक संतुलन के लिए खतरा • उपसंहार।

स्त्री और पुरुष जीवन रूपी गाड़ी के दो पहिए हैं। इस गाड़ी को सही ढंग से चलते रहने के लिए दोनों में संतुलन बहुत ही आवश्यक है। यह जानने के बाद समाज द्वारा लड़की और लड़के में अंतर करना या समझना कितना उचित रहेगा। जब लड़की और लड़के का जन्म एक ही कोख से होता है और दोनों को ही ईश्वर की रचना समझा जाता है तब ऐसा भेद करना तनिक भी उचित नहीं है।

सदियों से यह समाज पुरुष प्रधान रहा है। उसने अपने हितों को प्राथमिकता दिया और उसी के अनुसार विचारों का प्रचार-प्रसार किया। भारतीय समाज में ऐसी मान्यता है कि मृत्योपरांत स्वर्ग पाने के लिए पुत्र का होना बहुत जरूरी है। पुत्र न होने पर पिंडदान कौन करेगा और फिर मोक्ष कैसे मिलेगा। इसी का परिणाम है कि पुत्र के जन्म पर थाली बजाकर उत्सव मनाया जाता है और कन्या के जन्म पर मातम छा जाता है।

वर्तमान में हम समाज पर दृष्टि डालें तो पाएँगे कि जिन माता-पिता ने अपनी पुत्रियों की पढ़ाई-लिखाई पर ध्यान दिया, उनको विकसित होने का अवसर दिया, उनकी पुत्रियाँ आज उच्चपदों पर आसीन हैं और विभिन्न तरीकों से अपने माँ-बाप का नाम ऊँचा कर रही हैं। इंदिरा गाँधी, कल्पना चावला, एनी बेसेंट, मदर टेरेसा, लक्ष्मीबाई, सरोजनी नायडू, महादेवी वर्मा, पी. टी. उषा, कुंजू रानी, मेरी कोम, दीपिका कुमारी, चंद्रिका कुमार तुंग, माओ भंडार नायके, बेनजीर भुट्टो, लतामंगेशकर आदि हजारों ने अपने-अपने क्षेत्र में ऊँचाइयों को छुआ और लड़का-लड़की में अंतर करने वालों को, अपनी सोच बदलने पर विवश कर दिया। अनेक मामलों में लड़कियों, लड़कों से बीस सिद्ध होती हैं।

समाज में संतुलन बनाए रखने के लिए लिंग अनुपात में अधिक अंतर ठीक नहीं होता है। ऐसे में केवल पुत्र की कामना करने वालों को अपनी सोच में बदलाव लाने की आवश्यकता है। दोनों को ही ईश्वर का उपहार समझकर उनके उचित पालन-पोषण और शिक्षण का प्रबंध करना चाहिए। प्रायः देखा गया है कि समान अवसर पाने पर लड़कियाँ लड़कों से आगे निकल जाती हैं। ऐसे में हमे यथार्थ के धरातल पर उतरकर, व्यवहारवादी होना पड़ेगा और 'यत्र नार्यास्त, पूजन्ते रमन्ति तत्र देवता' को चरितार्थ करना होगा।

यद्यपि सरकार ने अनेक उपाय कर लोगों को लड़का-लड़की एक समान समझने की दिशा में जागरूक करने का प्रयास किया है तथा अनेक योजनाएँ शुरू की हैं ताकि लोग कन्याओं की उपेक्षा न करें और अपनी सोच में बदलाव लाएँ, पर यह सब सिर्फ सरकारी प्रयास से ही पूरा नहीं होगा। समाज के लोगों को आगे बढ़कर इस दिशा में कदम बढ़ाना होगा ताकि लोग लड़की-लड़के में भेद न करें।

स्वयं करें

निर्देश–दिए गए संकेत-बिंदुओं के आधार पर 250 शब्दों में निबंध लिखिए–

1. दूरदर्शन का अश्लील रूप

बढ़ती अश्लीलता, युवावर्ग पर कुप्रभाव, नैतिक मूल्यों में गिरावट, बढ़ती संयमहीनता।

2. मित्र की आवश्यकता

अकेलेपन से मुक्ति, असमय के साथी, सच्चे मित्र के गुण, चयन में सावधानी।

3. का वर्षा जब फसल सुखाने

सूक्ति का अर्थ, समय का सदुपयोग, समय अधिक मूल्यवान, समय से काम करना लाभदायी।

4. अभ्यास का महत्त्व या रस्सी आवत जात ते सिल पर परत निशान

आलस्य का त्याग, लक्ष्य की प्राप्ति, निराशा पर विजय, उन्नति का साधन।

5. जीवन में त्योहारों का महत्त्व

नीरसता को भगाने वाले, संस्कृति के परिचायक, समरसता बढ़ाने वाले, जीवन में ऊर्जा भरने वाले।

6. आलस्य मनुष्य का शत्रु

कामचोरी की प्रवृत्ति, दोषारोपण, भाग्यवादी, थोड़े से संतुष्टि।

7. ऐसी वाणी बोलिए मन का आपा खोय

मीठी वाणी सभी को प्रिय, कटुता भगाने का अद्‌भुत साधन, कटुवाणी से हानियाँ, कौए-कोयल से तुलना।

8. दहेज-प्रथा–एक अभिशाप

दहेज का अर्थ, दहेज का बिगड़ता स्वरूप, समाज को कमजोर करता दहेज, युवाओं की भूमिका।

9. प्रदूषण

प्रदूषण का अर्थ, प्रदूषण के कारण, प्रदूषण से हानियाँ, रोकथाम के उपाय।

10. कंप्यूटर–आज की आवश्यकता

अद्‌भुत वैज्ञानिक खोज, बढ़ता प्रयोग, शिक्षण में सहायक, अत्यधिक प्रयोग से हानियाँ।